विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति
गृह पत्रिका

अंक - 15 जनवरी - मार्च 2010

सम्पादकीय

ऋतु चक्र विविधताओं से सजा हुआ होता है । ऋतु शब्द का अर्थ ही है गतिशीलता । दिन के बाद रात और रात के बाद दिन कितने अनुशासन के साथ चलते हैं । ऋतु का अर्थ है नियम अर्थात प्रकृति का नियम । इन ऋतुओं के रूप का प्रभाव भारतीय संगीत से लेकर भारतीय चित्रकला तक दिखायी देता है । कोयल की कूक संगीत लाती है तो वसंत रंगबिरंगे फूलों को चित्रित करता है । हमारे त्यौहार भी ऋतु चक्र के अनुरूप हैं । वसंत ऋतु जोश और फुर्ती का प्रतीक है ।

जनवरी - मार्च तिमाही में प्रकृति के उत्साह के साथ ही कार्यालय में भी जनवरी माह में नये कैलेंडर वर्ष के स्वागत का उत्साह रहा । 27 मार्च को इस उत्साह पर चार चांद लगे जब राजभाषा विभाग द्वारा इस कार्यालय को वर्ष 2008-09 में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं हिन्दी में किए गए श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए 'प्रथम पुरस्कार' प्रदान किया गया । यह हम सबके सांघिक प्रयास का ही परिणाम है । मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी हम इसी तरह आगे बढ़ते रहेंगे ।

शुभकामनाओं सहित ।

(मनजीत सिंघ)
सदस्य सचिव

गुरदयाल सिंह
सत्यमेव जयते

दूरभाष (कार्या) Telephone (O) : 011-26102583
टेलिफैक्स Telefax : 011-26109212
ई-मेल E-mail : chair@nic.in
अध्यक्ष तथा पदेन सचिव भारत सरकार
केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण
सेवा भवन, रामकृष्ण पुरम् नई दिल्ली - 110606
CHAIRPERSON & EX-OFFICIO SECRETARY
TO THE GOVERNMENT OF INDIA
CENTRAL ELECTRICITY AUTHORITY
SEWA BHAWAN, R.K. PURAM
NEW DELHI-110606

अ0शा0-पत्र सं0-1/1/2010-के0वि0प्रा0 दिनांक 30/3/2010

प्रिय श्री मनजीत सिंघ,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम) के अंतर्गत "ख" क्षेत्र में आने वाले केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में वर्ष 2008-09 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा हिंदी में किए गए श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए भारत सरकार, राजभाषा विभाग की ओर से आपके कार्यालय को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त राजभाषा सम्मान एवं छात्र गौरव पुरस्कार के लिए भी आपके कार्यालय के पदधारियों का चयन किया गया है।

इस अवसर पर आप एवं आपके कार्यालय के सभी सहयोगियो को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। आपसे अनुरोध है कि मेरा यह बधाई संदेश अपने कार्यालय के सभी सहयोगियों को भी प्रेषित करें।

सादर सहित ।

श्री मनजीत सिंघ
सदस्य सचिव,
पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति,
अंधेरी, एफ-3,एम.आय.डी.सी.,मरोल,
अंधेरी(पूर्व), मुंबई – 400 093

आपका सदभावी,
गुरदयाल सिंह 30/3/10
(गुरदयाल सिंह)

श्री अजय माकन, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार के कर कमलों से प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री एम.एम.धकाते, राजभाषा अधिकारी / सहायक सचिव

श्री अजय माकन, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार के कर कमलों से राजभाषा प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री मनजीत सिंह, सदस्य सचिव

माँ तुझे सलाम ।

सृष्टि का सबसे पवित्र एवं अद्वितीय स्थान है 'माँ' का । कहते हैं ईश्वर को हर समय हर व्यक्ति के पास रहना मुश्किल था इसलिए उसने 'माँ' की रचना की । भारतीय संस्कृति में नारी को देवता का दर्जा दिया है और माता, बेटी, बहन, सखी, पत्नी आदि नारी के विभिन्न रूपों में सर्वश्रेष्ठ रूप है माता का । ईश्वर की तरह माँ भी एक सृष्टि रचती है, एक जीवन को जन्म देती है ।

विश्व की हर संस्कृति में माँ का स्थान आदरणीय है । शायद इसलिए पाश्चात्य देशों में मई माह के दूसरे रविवार को 'मदर्स डे' तो हिंदु संस्कृति में श्रावण माह के अमावस को 'मातृदिन' मनाया जाता है ।

समय के साथ हर चीज बदल जाती है । बदलती नहीं तो सिर्फ माँ की ममता । हाँ, समय के साथ माँ की दनचर्या जरूर बदल गयी है और उसका प्रभाव, उसकी ममता व्यक्त करने के तरीके पर भी पड़ा है । कुछ वर्ष पहले माँ सिर्फ गृहिणी हुआ करती थी, इसलिए बच्चों के लिए वह हर समय उपलब्ध होती थी । आज वह कामकाजी हो गयी है, वह हर कार्यक्षेत्र में अग्रणी है । फिर वह कार्य क्षेत्र चाहे स्त्री प्रधान हो जैसे कि शिक्षिका, परिचारिका, एयर होस्टेस, रिसेपशनिस्ट आदि या फिर पुरूष प्रधान जैसे पायलट, बस कंडक्टर, रिपोर्टर, राजदूत, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, इंजीनियर, डॉक्टर, इंस्पेक्टर आदि, नारी ने अपनी जगह बना ली है । उसका दायित्व और भी बढ़ता है जब वह माँ होती है । कार्यक्षेत्र में समय की अनिश्चितता होते हुए भी वह माँ की भूमिका को न्याय देने के लिए जी जान से प्रयत्नशील रहती है । जब माँ गृहिणी थी तब उसके पास समय अधिक था । अब उसके पास समय कम है तो वह 'क्वालिटी टाईम' देती है । कैरियर करते हुए उसे जितना भी समय मिले वह गृहिणी के कर्तव्य भी पूर्ण करती है और बच्चे की पढ़ाई, उसे सुविधाएँ देने की कोशिश करती रहती है । आज स्पर्धा का युग है, इसलिए वह अपने बच्चे को स्पर्धा के लिए सक्षम बनाने में लगी रहती है । कभी-कभी बच्चे की भलाई के लिए वह कठोर भी बन जाती है । इस विषय में हम प्राचीन काल में झाँके तो पाते हैं कि जब जीवन को चार भागों में बाँटा था, तब वह अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले इसलिए गुरू के आश्रम में भेजती थी । तब वह बच्चे की भलाई के लिए अपने से अलग करती थी । वह अपने ममता के जज्बे को कैसे नियंत्रण में रखती होगी । समय बदला लेकिन आज भी जब माँ कामकाज के लिए अपने बच्चे को घर पर या क्रेच में छोड़ती है और वह उसकी उंगली पकड़कर कहता है 'ममा मत जाओ' तब जरूर उसका कलेजा चिर जाता होगा । लेकिन वह बच्चे को मनाकर अपनी भावनाओं पर नियंत्रण पाकर अपने कार्य क्षेत्र के कर्तव्यों की ओर मुड़ती है ।

आज के स्पर्धा के युग में जीवन गतिमान हो गया है । कुछ लोग भौतिकता के अधीन होकर 'डबल इनकम नो किड' का फंडा अपना रहे हैं । लेकिन वे नहीं जानते कि वे कौनसे अलौकिक आनंद से वंचित रह रहे हैं । एक ओर ऐसी विचारधारा की नारी है तो दूसरी ओर अपना एक बच्चा होते हुए भी दूसरे अनाथ बच्चे को गोद लेकर उस पर ममता की वर्षा करने वाली माताएँ भी है । इसलिए माँ जैसा कोई नहीं । माँ तुझे सलाम ।

तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक

नारी

वेदना की देवी यमराज से लड़ने वाली नारी है
सभ्य समाज में स्नेह और सम्मान की अधिकारी है
नारी की हर रूप में भूमिका निराली है
जननी, बेटी, बहन, पत्नी, शारदा, भवानी है
दर्द सहकर विषम परिस्थिति में भूमिका बखूबी संभाली है
सम्मान की विभूति को आँसू, दुख और मिली गाली है
असंख्य वेदना सहकर जीवन देने वाली सृष्टि की महतारी है
वेदना की देवी यमराज से लड़ने वाली नारी है
ममता का सागर, आँचल में अमृत, आँखों में पानी है
आदि से अभी तक तेरी दर्द भरी कहानी है
लाडली से दादी तक सोंच गंभीर और करनी सयानी है
कहीं असहाय अबला, कहीं मर्दानी झाँसी की रानी है
मन में बस जायें जो देवता सिर्फ उसकी ही पुजारी है
जीवन दायनी, दुख हरनी, तेरी लीला जग में बलीहारी है
वेदना की देवी यमराज से लड़ने वाली नारी है
सभ्य समाज में स्नेह और सम्मान की अधिकारी है ।

के. आर. राय, सहा.निदे.-I

राजभाषा समाचार

- राजभाषा विभाग, भारत सरकार की ओर से इस कार्यालय को राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए 'ख' क्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों में 'प्रथम पुरस्कार' प्रदान किया गया । दिनांक 27 मार्च 2010 को दमण में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में प्रथम पुरस्कार की ट्रॉफी श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव ने ग्रहण की एवं श्री एम.एम. धकाते, राजभाषा अधिकारी ने प्रमाण पत्र ग्रहण किया । इस सम्मेलन में श्री एस.जी. टेनपे, अधीक्षण अभियंता एवं श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने भी भाग लिया ।
- दिनांक 10 मार्च 2010 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री शेषकुमार सावंत, उ.श्रे.लि. ने 'एक्सल में हिन्दी कार्य' विषय पर व्याख्यान दिया । कुल 16 अधिकारी / कर्मचारी ने इस कार्यशाला का लाभ लिया ।

समाचार दर्पण

- श्री के. षणमुग्न, सहायक निदेशक ने दिनांक 26 फरवरी 2010 को पक्षेविसमिति से त्याग पत्र दिया । आपकी कार्यकुशलता एवं कर्मठता अनुकरणीय है । पक्षेविसमिति परिवार की ओर से आपको स्वस्थ एवं यशस्वी जीवन की शुभकामनाएँ ।